नमूना प्रश्न पत्र - 1 उत्तरमाला (2021-2022)

कक्षा - 10

विषय - हिन्दी (पाठ्यक्रम 'ब')

खण्ड 'क'

1. (क) 'सहस्त्र दृग सुमन' से तात्पर्य है, सहस्त्र फूलों के रूप में पर्वत अपने नेत्रों को खोलकर प्रकृति का रूप निहार रहा है। ऐसा प्रतीत होता है मानो ये सहस्त्रों पुष्प पर्वत के नेत्र हैं जिनके माध्यम से पर्वत अपने रूप को निहार रहा है। इसके माध्यम से कवि पर्वत का मानवीकरण कर रहा है।

(ख) वजीर अली की योजना यह भी कि किसी तरह वह नेपाल पहुँच जाए। वहाँ पहुँचकर अफगानी हमले का इंतजार किया जाए अपनी ताकत बढ़ाई जाए और फिर सआदत अली को अवध की गद्दी से उतारा जाए। अवध पर कब्जा करके वह अंग्रेजों को हिन्दुस्तान से भगाना चाहता था। अंग्रेजों के विचार से वह ऐसा करने में सफल हो सकता था: क्योंकि अंग्रेज अपनी पूरी ताकत लगाकर भी उसे पकड़ नहीं पा रहे थे और वह अपने कार्य में जी जान से लगा था।

(ग) 'इस पंक्ति में हिमालय भारत के मान-सम्मान का प्रतीक है। भारतीय सैनिकों ने अपना सिर तो कटवा दिया, परंतु अपनी मातृभूमि भारत के मान-सम्मान की रक्षा की। भारतीय सैनिकों ने अपनी कुर्बानी देकर भारत की रक्षा की।

2. (क) वह एक छह मंजिला इमारत थी उसकी छत पर दफ्ती की दीवारों से बनी एक सुन्दर पर्णकुटी थी। उसमें सुन्दर चटाई बिछी हुई थी। कुटी के बाहर एक बेडॉल मिट्टी का बरतन था, जिसमें पानी भरा था। लेखक और उसके मित्र ने उसमें हाथ पैर धोए, तौलिये से पोंछे और फिर अंदर गए। अंदर एक चाजीन बैठा था। उसने उठकर दोनों को झुककर प्रणाम किया और आइए, तशरीफ लाइए कहकर स्वागत किया। उन्हें बैठने की जगह दिखाई। अँगीठी सुलगाई। उस पर चायदानी रखी। बगल के कमरे से जाकर कुछ बरतन लाया। उन्हें तौलिये से साफ किया। उसकी इन सभी क्रियाओं में लेखक और उसके मित्र को मधुर संगीत धुन जैसी अनुभूति हो रही थी। वहाँ अद्भूत शांति थी। चायदानी में पानी का खदबदाना भी उन्हें सुनाई दे रहा था।

अथवा

(ख) मनुष्य को मानव योनि में जन्म लेने का सौभाग्य अनेक योनियों में जन्म लेने के बाद ही प्राप्त होता है। इसलिए हमें अपने इस मानव जीवन को सार्थक बनाना चाहिए, जिससे अपनी मृत्यु के उपरांत भी हम अमर हो जाएँ और हमारे महान् कार्यों के कारण सब हमारा स्मरण करें। हमें सदैव लोक मंगलकारी, सर्वजन हितार्थ और परोपकारी कार्यों को करना चाहिए। मनुष्य को असहायों और बेसहारों का सहायक बनना चाहिए। निराश्रितों को आश्रय प्रदान करना और पीड़ित की पीड़ा दूर करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए। परोपकार ही मनुष्य को महान् बनाता है, इसलिए उदारता व परोपकार को अपना ध्येय बनाकर जीवन-पथ पर आगे बढ़ना चाहिए, तभी मानव जीवन सार्थक हो सकता है।

3. (क) 'टोपी शुक्ला' पाठ में टोपी और इफ्फन क्रमश: हिन्दु ओर मुसलमान कौम का प्रतिनिधित्व करते है। इन दोनों चरित्रों के माध्यम से लेखक यह संदेश देना चाहता है कि सब धर्मो के लोग एक ईश्वर की रचना है। उनमें केवल नाम का भेद है, अन्यथा सब एक ही है। लेखक बताना चाहता है कि धर्म, जाति भाषा और परम्पराएँ अलग होने पर भी देश के हिन्दू और मुसलमान सौहार्द भाव से रह सकते है। पाठ में टोपी हिन्दू है और इफ्फन मुसलमान है। दोनों के परिवार धार्मिक कट्टरवादी हैं, लेकिन फिर भी इन दोनों में गहरी मित्रता है। वे कहानी में भी एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। लेखक संदेश देना चाहता है कि यदि इसी प्रकार कट्टरवाद को छोड़कर दोनों कौमों के लोग एक दूसरे के साथ भाईचारे का संबंध जोड़ लें, तो देश में मजहब के नाम पर इंसानियत का खून बहना रोका जा सकता है।

(ख) ठाकुरबारी जैसी संस्थाओं को ग्रामीण समाज के प्रति एक महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वहन करना चाहिए। किसी भी सामाजिक अथवा धार्मिक संस्था का यह दायित्व है कि वह समाज में व्याप्त स्वार्थ की भावना को दूरकर जन जन में परोपकार का भाव जगाए। समाज में व्याप्त अनाचार, अराजकता, अन्याय, अंधविश्वास और पापाचार को दूरकर जन जन में संतोष एंव धैर्य के भाव जाग्रत करे। हरिहर

काका कहानी में भी गाँव के लोगों की ठाकुरबारी से होता था तो वहीं दुखी मन को आश्रय देने का स्थान भी उन्हें ठाकुरबारी ही दिखाई देता था, परन्तु आस्था और विश्वास के इस मंदिर ने हरिहर काका जैसे लोगों के साथ विश्वासघात और दुर्व्यवहार करकेये दिखा दिया कि बदलते परिवेश के साथ साथ धार्मिक संस्थाएँ भी भ्रष्टाचार और अपराध के अड्डे बन गई है। ऐसे में ठाकुरबारी के महंत एवं तथाकथित साधु समाज के प्रति जन मानस में घृणा का भाव ही पैदा होता है: क्योंकि समाज उनसे अच्छे और आदर्श आचरण की अपेक्षा करता है। लोभ लालच और षड्यंत्रों में फँसे साधु संतो के इस आचरण से युवा पीढ़ी पर बुरा प्रभाव पड़ता है। धार्मिक संस्थाओं और समाज की उच्च आदर्शवादिता से उनका विश्वास उठने लगता है, जो किसी भी समाज के लिए हितकारी नहीं हैं।

(ग) मास्टर प्रीतमचंद बहुत ही कठोर एवं सख्त स्वभाव के अध्यापक थे। अनुशासन के लिए विद्यार्थियों की पिटाई करने में उनके मन में तनिक भी दया या संकोच का भाव नहीं आता था। एक बार शब्द रूप याद न होने के कारण उन्होनें चौथी कक्षा के छोटे छोटे बच्चों को मुरगा बना दिया। हेडमास्टर शर्मा जी ने जब उनका यह अमानवीय व्यवहार देखा तो बहुत क्रोधित हुए और उन्होने पी. टी. साहब को मुअत्तल कर दिया। हमारे विचार से उनका निलंबन उचित था क्योंकि छोटे छोटे बच्चों को शारीरिक दंड देना अमानवी है। अध्यापक की कठोरता का बच्चों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है और बहुत से बच्चे स्कूल ही छोड़ देते है: अत: हेडमास्टर शर्मा जी ने पी. टी. साहब को मुअत्तल करके सराहनीय कार्य किया।

4. (क) समय बहुत अमूल्य होता है। सोने, चाँदी, हीरे आदि हर एक चीज़ का मूल्य लगाया जा सकता है लेकिन समय की कोई कीमत नही लगाई जा सकती। समय का प्रत्येक क्षण अमूल्य होता है। पैसे-रूपयों को हम बैंक या कहीं और जमा कर सकते हैं। लेकिन समय टिकाऊ नहीं होता और वह किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करता है। वह इतना तीव्रगामी है कि उसे कोई वायुयान तक नहीं पकड़सकता है। अगर कोई पकड़ सकता है, तो सिर्फ़ वह जो उसकी गतिविधि पर दृष्टि जमाए हुए उसके प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करता है। कबीरदास जी ने समय के संबंध में कहा है-

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।

पल में परले होयगी, बहुरि करौगे कब।।

अर्थात हमें जो काम कल करना है, उसे आज ही कर लेना चाहिए और कार्य आज करना है, उसे तुरंत करना चाहिए जिन्होंने जीवन के एक-एक पल का सदुपयोग किया है, वे ही सफलता के शिखर पर पहुँच सके हैं। समय का सुदपयोग ही सफलता का आधार है। जो व्यक्ति समय का दुरूपयोग करते है, वे हमेशा असफल होते हैं और उन्हें अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है। धन एक बार चले जाने से उसे फिर प्राप्त किया जा सकता है लेकिन बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता है। जो इस रहस्य को समझ लेता है, वह कभी असफल नहीं होता है। समय ही वह कसौटी है जिस पर मनुष्य के जीवन को परखने से उसकी सफलता और असफलता की परीक्षा होती है।

(ख) मनुष्य का मन स्वभाव से बहुत ही चंचल होता है। मनुष्य के मन में अनेक प्रकार की लालसाएँ तथा इच्छाएँ उठती रहती है। जिसका कोई अंत नहीं होता है। उसकी एक इच्छा के समाप्त होते ही दूसरी इच्छा का जन्म हो जाता है। यह सिलसिला चलता ही रहता है। जिस व्यक्ति का मन संतुष्ट होता है वह धनवान है और जिस व्यक्ति का मन संतुष्ट नहीं होता वह व्यक्ति बिलकुल निर्धन है, चाहे उसके पास सभी साधन क्यों न हों। कबीरदास का कथन है, ''संतोष रूपी धन के सामने अन्य सभी धन मिट्टी के समान है।'' जिस व्यक्ति के पास संतोष रूपी धन आ जाता है, उसे किसी और धन को प्राप्त करने की इच्छा नहीं रहती। आज के मानव में दूसरे लोगों को खुश देखकर ईर्ष्या की भावना पैदा होती है। ईर्ष्या की भावना के कारण ही मनुष्य के जीवन में असंतोष देखा जा सकता है। आज के समय में व्यक्ति धन कमाने के चक्कर में बुरे-से -बुरा काम करने में संकोच का अनुभव नहीं करता है, क्योंकि उसमें पैदा हुआ लालच उसे उसकी बुराई के बारे में सोचने ही नहीं देता। आज का मानव धन के लालच में पड़कर मानव की जगह दानव बन चुका है। हमारे समाज में होने वाले सभी अपराधों के पीछे धन पाने की लालसा ही है। हम लोगों का जीवन और अधिक पाने की लालसा में ही भटकता रहता है। इसके विपरीत जिस व्यक्ति का अपनी इच्छाओं के ऊपर नियंत्रण होता है, वह व्यक्ति तो दुनिया का सारा सुख अपने काबू में कर लेता है। वह निर्धन होते हुए भी सुख का अनुभव करता है, लेकिन जो

व्यक्ति अपनी इंद्रियों तथा इच्छाओं को काबू में नही कर पाता, वह व्यक्ति जीवन भर अशांति का जीवन व्यतीत करता है। धन की जितनी अधिक इच्छा होगी, लोभ का उतना ही अधिक जन्म होगा। लोभ पाप का मूल होता है। जो लोग धन से ऊपर किसी भी चीज़ को नहीं मानते हैं, वे धन को प्राप्त करने की इच्छाओं पर काबू नहीं रख पाते। ऐसे लोग धनी होने पर भी सदा दुखी रहते हैं। इसलिए मन का संतोषी व्यक्ति धनी है। जबकि अंसतोषी व्यक्ति सभी सुख-सुविधाओं के होते हुए भी निर्धन है।

(ग) 'सादा जीवन उच्च विचार' का सामान्य अर्थ यही है कि हमें सादगी से जीवन व्यतीत करना चाहिए तथा अपनी भावनाओं को महान बनाए रखना चाहिए। महान व्यक्तियों का हमारे देश में अभाव नहीं रहा है। उदाहरणत: आप गांधी जी को ही देख लीजिए, कितनी सादी वेश-भूषा में रहते थे लेकिन अपने महान विचारों से वह संसार में वंदनीय हो गए। ऐसे व्यक्ति संसार में कम होते है, जो जन्म से ही विख्यात होते हैं। अधिकांश ख्याति अपने चरित्र-बल और परिश्रम से ही प्राप्त होती है। कई ऐसे महान व्यक्ति हैं, जिनका जन्म साधारण कुल में हुआ और वह अपने सद्‌गुणों और परिश्रम से विख्यात हो गए। जीवन में सादगी का समावेश करना तथा तुच्छ विचारों को जीवन से दूर कर देना अपने आप में महान गुण है। सादा जीवन व्यतीत करने वाला विनयशील, शिष्ट और आत्मनिर्भर होता है। अपने जीवन को सफल बनाने के लिए सहिष्णुता, साहस, चरित्र-बल आदि गुणों को अपने जीवन में उतारना अति आवश्यक है। ये गुण ही हमारे जीवन को प्रभावित व विकसित करते हैं। वेश-भूषा, रहन-सहन और आचार-विचार का एक स्तर होना चाहिए। बड़ी-से -बड़ी मुसीबतों के आगे भी झुकना नहीं चाहिए। अपने धैर्य को बरकरार रखना चाहिए। धन का अपव्यय नहीं करना चाहिए तथा अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखना चाहिए। अर्थात अपने जीवन को यथा संभव सादा बनाएँ।

5. परीक्षा भवन

दिल्ली।

दिनांक 20 अगस्त, 20××

सेवा में,

श्रीमान स्वास्थ्य अधिकारी,

दिल्ली नगर निगम,

दिल्ली - 000000

विषय :- क्षेत्र में फैली गंदगी के संबंध में।

महोदय,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र में चारों ओर फैली गंदगी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। मैं आदर्श नगर का निवासी हूँ, जो किसी समय सबसे अधिक साफ-सुथरा क्षेत्र माना जाता था, किंतु आज इस क्षेत्र की दशा अत्यंत चिंताजनक है। जगह-जगह कूड़े के ढेर लगे हुए हैं, जिन पर मच्छर एवं मक्खियाँ भिनभिनाते रहते हैं। जिसके कारण हमारे क्षेत्र में रह रहे लोगों में मलेरिया तथा अन्य बीमारियों के फैलने का खतरा भी दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। हमारे क्षेत्र में गंदगी इतनी बढ़ गई है कि क्षेत्र से जाने वाले लोागों को नाक बंद करके निकलना पड़ता है इस कारण लोगों का जीना दूभर हो गया है।

अत: आपसे निवेदन है कि कृपया इस क्षेत्र की स्वास्थ्य सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए बिना विलंब किए कोई महत्वपूर्ण कदम उठाया जाए। हम सभी क्षेत्रवासी आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

क. ख. ग.

अथवा

परीक्षा भवन

दिल्ली।

दिनांक 23 फरवरी, 20××

सेवा में,

श्रीमान संपादक महोदय,

दैनिक हिंदुस्तान ,

नई दिल्ली।

विषय दिल्ली में बढ़ती हुई अपराधवृत्ति से संबंधित।

महोदय,

मैं आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से दिल्ली सरकार के अधिकारियों काध्यान दिल्ली में बढ़ती हुई अपराधवृत्ति की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ। आशा है कि आप मेरे पत्र को अपने लोकप्रिय समाचार-पत्र में प्रकाशित करेंगे।

अत्यंत खेद के साथ मुझे लिखना पड़ रहा है कि दिल्ली में आजकल गुंडागर्दी, बलात्कार, हत्याएँ, लूटपाट, अपहरण जैसी आपराधिक घटनाएँ लगातार बढ़ रही हैं। देश की राजधानी दिल्ली 'अमन चैन की राजधानी' न रहकर असामाजिक तत्त्वों व अपराधियों द्वारा निर्मित 'भय व आतंक के वातावरण की राजधानी' बनकर रह गई है। दिन-दहाड़े दुकानदारों से लूट, घरों में चोरी, छोटे बच्चों का अपहरण, लड़कियों से छेड़छाड़ व बलात्कार तो जैसे आम बात हो गई है। सुबह-सुबह समाचार-पत्र देखने पर ऐसा लगता है जैसे दिल्ली में पुलिस का नहीं, बल्कि अपराधियों का नियंत्रण है।

अत: केंद्र सरकार तथा पुलिस के अधिकारियों से मेरा अनुरोध है कि वे इस संबंध मे कठोरतम कार्यवाही करें, जिससे अपराधियों के मन मे कानून के प्रति भय उत्पन्न हो और वे अपराध करने से पहले दस बार सोचें। अपराधियों पर नियंत्रण रखा जाना अत्यंत आवश्यक है।

सधन्यवाद

भवदीय

क.ख.ग.

6. (क)

रागिनी पब्लिक स्कूल, नोएडा

15 फरवरी, 20×× **सूचना**

यात्रा का आयोजन

सभी छात्र-छात्राओं को सूचित किया जाता है कि हमारा विद्यालय नोएडा से नैनीताल की यात्रा का आयोजन कर रहा है। यात्रा से संबंधित जानकारी इस प्रकार है-

दिनांक	-	25 फरवरी से 2 मार्च तक।
मूल्य	-	10,000/- प्रति विद्यार्थी
योजना	-	प्रचलित स्थानों पर जाना, पर्वतीय स्थल का आनंद, अन्य आकर्षक एवं मनोरंजक गतिविधियाँ।

इच्छुक छात्र-छात्राएँ 20 फरवरी तक अपने नाम कक्षाध्यापिका को दे दें।

अध्यक्षा

विद्यार्थी परिषद

अथवा

स्वास्थ्य संगठन, नोएडा

15 फरवरी, 20×× **सूचना**

नि:शुल्क नेत्र जाँच शिविर का आयोजन

आपके नोएडा क्षेत्र बी–226, सैक्टर–26 में स्वास्थ्य संगठन द्वारा नि:शुल्क नेत्र जाँच शिविर का आयोजन 16 फरवरी, 20×× से 28 फरवरी, 20×× तक किया जा रहा है। इस शिविर के अंतर्गत अनुभवी नेत्र विशेषज्ञ चिकित्सक (डॉक्टर) उपस्थित रहेंगे।

विस्तृत जानकारी हेतु हमारे कार्यालय में संपर्क करें।

क, ख, ग

सचिव, स्वास्थ्य संगठन

(ख)

जल–विभाग, दिल्ली

19 जुलाई, 20xx **सूचना**

जल आपूर्ति में रूकावट

गोविंदपुरी, दिल्ली के सभी क्षेत्रवासियों को सूचित किया जाता है कि पानी के पाइप की मरम्मत के कारण दिनांक 22 और 23 जुलाई, 20xx को जल की आपूर्ति प्रात: 9 बजे से 6 बजे तक बंद रहेगी। असुविधा के लिए खेद है।

क, ख, ग

जल–विभाग सचिव

अथवा

सैंट मैरी स्कूल, दिल्ली

20 सितंबर, 20xx **सूचना**

रंगोली प्रतियोगिता

आपके विद्यालय के साहित्य संगठन द्वारा रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन 25 सितंबर, 20xx को किया जा रहा है। कक्षा छठी से बारहवीं तक के इच्छुक छात्र–छात्राएँ नामांकन हेतु अपनी कक्षाध्यापिका से संपर्क करें।

क, ख, ग

अध्यक्ष : साहित्य संगठन

7- (क)

शुद्धता और विश्वास का दूसरा नाम

गोरी ज्वैलर्स

पेश करते हैं सोना एक्सचेंज ऑफर

किसी भी ज्वैलर्स से खरीदे या बनावाए गए गहनों को एक्सचेंज करें और उनके बदले पाएँ एकदम नए गहनें

जल्दी करें ऑफर सीमित है।

पता– दुकान नं 109, दूसरा तल, चाँदनी चौक, दिल्ली। फोन नं– 011-20535XX

अथवा

(ख)

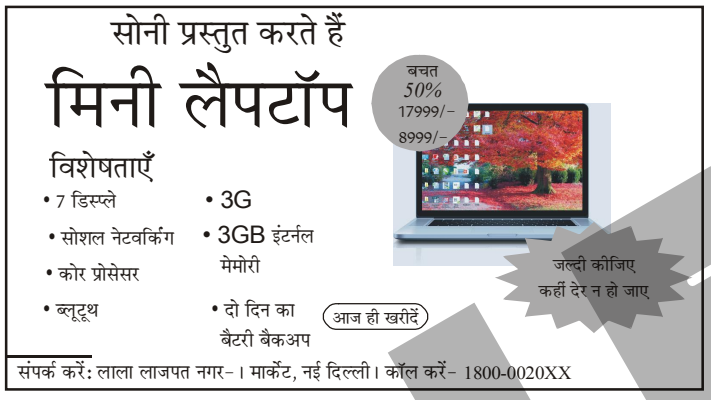

अथवा

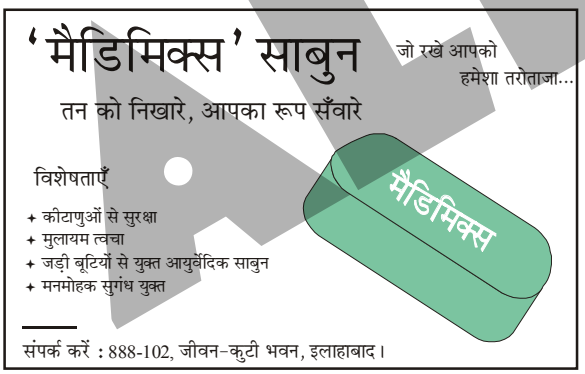

8. **उक्ति का अर्थ** ''लालच बुरी बला है'' अर्थात् मनुष्य लालच के वशीभूत होकर पथ भ्रष्ट हो जाता हैं। इस उक्ति को पढ़कर एक कथा स्मरण हो आती है, जो निम्न प्रकार हैं

कथा एक गाँव में एक सेठ रहता था। उसके बंगले के पास एक गरीब मोची की छोटी-सी दुकान थी। उस मोची की आदत थी कि वह, जब भी जूते सिलता भगवान का भजन करता था, लेकिन सेठ का भजन की तरफ कोई ध्यान नहीं था। एक दिन सेठ व्यापार के सिलसिले में विदेश गया। घर लौटते वक्त उसकी तबीयत बहुत खराब हो गई, लेकिन पैसे की कमी न होने से देश विदेश से डॉक्टरों को बुलाया गया, पर कोई भी सेठ की बीमारी का इलाज नहीं कर सका। अब सेठ की तबीयत इतनी अधिक खराब हो गई कि वह चल भी नहीं पाता था। एक दिन बिस्तर पर लेटे हुए उसे मोची के भजन गाने की आवाज सुनाई दी, उसे आज मोची के भजन अच्छे लग रहे थे। सेठ भजन सुनकर ऐसा मंत्र मुग्ध हो गया कि उसे लगा जैसे उसके साक्षात् परमात्मा के दर्शन हो गए। मोची का भजन सेठ को उसकी बीमारी से दूर ले जा रहा था। भगवान के भजन में लीन होकर वह अपनी बीमारी भूल गया और उसे आनंद की प्राप्ति हुई तथा उसके

स्वास्थ्य में भी सुधार आने लगा। एक दिन सेठ ने मोची को बुलाकर ₹ 1000 का इनाम देते हुए कहा कि मेरी बीमारी का इलाज बड़े-से-बड़े डॉक्टर नहीं कर पाए, पर तुम्हारे भजन ने यह काम कर दिया मैं तुम्हें रहने के लिए एक घर भी दूँगा। मोची इनाम पाकर बहुत खुश हुआ, वह रात दिन पैसों के और घर के बारें में सोचता रहा। अगले दिन वह काम पर भी नहीं गया। लालच के कारण धीरे-धीरे उसकी दुकानदारी चौपट होने लगी, उधर सेठ की बीमारी फिर से बढ़ती जा रही थी। मोची को जब लालच का एहसास हुआ, तो वह सेठ को पैसे वापस करने के लिए सेठ के बंगले में आया। उसने सेठ से निवेदन किया कि आप यह पैसे वापस रख लीजिए, मुझे आपका घर भी नहीं चाहिए, क्योंकि इसके कारण मेरा धंधा चौपट हो गया हैं, मैं भजन भूल गया हूँ। इस धन ने मेरा परमात्मा से नाता तुड़वा दिया। मोची पैसे वापस करके पुन: अपने काम में जुट गया।

वस्तुत: पैसों और घर के लालच ने मोची को पथ भ्रष्ट कर दिया था। वह अपने काम को यहाँ तक कि परमात्मा को भी भूलकर पैसों और घर के लालच में ही डूब गया था। अंत में मोची जान गया था कि ''लालच बुरी बला है।''

सीख इस कथा से हमें यह सीख मिलती है कि हमें लालच नहीं करना चाहिए, क्योंकि लालच बुरी बला है।

अथवा

उक्ति का अर्थ ''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।'' प्रस्तुत उक्ति का अर्थ हैं - यदि हमारे मन में किसी कार्य के प्रति दृढ संकल्प है, तो कोई भी कार्य असंभव नहीं है। यदि हमारे मन ने हार मान ली तो हार निश्चित हो जाएगी औरयदि हमारे मन में आत्मविश्वास है, जीतने की इच्छा है तो जी निश्चित होती है। यह उक्ति निम्नलिखित कथा द्वारा स्पष्ट रूप से समझी जा सकती है।

कथा एक बार की बात है, दो राजाओं के बीच भयंकर युद्ध हुआ। जैसा कि होता है कि युद्ध में एक की ही विजय होती है और एक की हार निश्चित होती है।

इस युद्ध में भी ऐसा ही हुआ। एक राजा इस युद्ध में हार गया। उसे जन-धन की बहुत हानि हुई उसके सैनिक पराजित राजा को ढूँढ रहे थे। पराजित राजा अपना जीवन बचाने के लिए भागा-भागा फिर रहा था। उसने छिपते-छिपाते एक खोह में शरण ली। वह मन से पूरी तरह पराजित हो चुका था। खोह में छिपा हुआ भी वह मानों अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था। उसे इस बात का पूरा विश्वास था कि शत्रु की तलवार कभी भी उसका काम तमाम कर देगी। वह इन्ही विचारों में खोया हुआ था कि उसकी नजर एक मकड़ी पर पड़ी, जो खोह के दरवाजे पर जाला बनाने में व्यस्त थी, उसकी कोशिशें बार-बार नाकाम साबित हो रही थी, लेकिन उसने प्रया करना नहीं छोड़ा। राजा ने सोचा कि वह बेकार ही प्रयत्न कर रही है। भला आधार के बिना जाला कैसे बन सकता है, लेकिन थोड़ी देर बाद राजा ने देखा कि मकड़ी जाला बनाने में सफल हो गई। थोड़ी देर में पूर खोह के मुँह पर जाला बनाया जा चुका था। तभी शत्रु सैनिक वहीं आ पहुँच, लेकिन खोह के मुँह पर मकड़ी का जा बना देख लौट गए। करीब आई हुई मृत्यु तो टल गई, पर राजा एक गहरे विचार में पड़ गया। उसने सोचा कि मैं स्वय तन-मन से पराजित था। अत: मैने मकड़ी को ाी हारा हुआ मान लिया था, लेकिन वह छोटी-सी मकड़ी को भी हारा हुआ मान लिया था, लेकिन वह छोटी-सी मकड़ी हारी हुई नहीं थी। वह बार-बार गिरकर भी निराश और परास्त नहीं हुई। क्या मैं मनुष्य होकर भी इस मकड़ी से दुर्बल हूँ? उसने अपने मन को मजबूत किया और संकल्प लिया कि वह अपने शत्रुओं का अवश्य पराजित करेगा। वह तुरन्त उस खोह से बाहर आया। अब वह एक हताश-निराश, पराजित राजा नही था, वरन् मजबूत इरादे वाला व्यक्ति था, जिसे हर हाल में विजय पानी थी। उसने अपने साथियों को एकत्रा किया और अंत में अपने शत्रु को हरा कर अपना राज्य पुन: प्राप्त किया। अत: यह सच ही है कि

''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।''

सीख प्रस्तुत कथा से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने मन को मजबूत और दृढ-संकल्प करके कार्य करना चाहिए, तभी हमें सफलता प्राप्त हो सकती है।